

पशुधन स्वराज : पशुधन के लिए पशु-घर का महत्व

किसान भाइयों जैसा कि हम जानते है ग्रीष्म ऋतु के पश्चात वर्षा ऋतु आती है और अपने साथ प्रकृति के नए रंग, नई उमंग एवं नये जीवन के साथ-साथ ही कई बीमारियों को भी लेकर आती है। आदिवासी अंचल में जिनका घर कच्चा होता है उन्हें वर्षा ऋतु के पूर्व अपने आवास की उचित व्यवस्था की चिंता होती है, जिसमे वह अपने घर की छत की चट्टों, बरसाती या फिर केवल को व्यवस्थित करता है। जलाऊ लकड़ी एकत्रित करने के साथ ही घर से निकलने वाली जल निकासी को ठीक करता है, ताकि परिवार की सुरक्षा बनी रहे।



इसी प्रकार हमारे पशुधन की देखभाल करना भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। पशु बेजुबान होता है जो कभी भी अपने दुःख दर्द को बोल नहीं सकता है। हमेशा स्वच्छ वातावरण में रहने वाले पशु निरोगी व प्रसन्नचित रहते है। पशुओं के लिए स्वस्थ,साफ-सुथरा व हवादार आवास का निर्माण करें। पशुओं की उत्पादकता और कार्य क्षमता पर वातावरण और रहन- सहन का बहुत असर पड़ता है, यदि उनकी देखभाल ठीक से न की जाये तो वे उदासीन हो जाते है और उनको कई तरह के रोग लग सकते है।

तो आईये हम पशुधन के लिए आवास की भूमिका को समझे और जाने इसके क्या उपाय और लाभ है ?



1. स्थान का चुनाव :-

पशुओं का घर बनाने के लिए शुष्क और जमीन से थोड़े ऊँचे स्थान का चयन करना चाहिए, जिससे की पानी का निकास अच्छे से हो जाये। पशु घर में पशुओं का मलमूत्र आसानी से खेतों में या खेतों तक ले जाने के लिए जमीन ढालू होनी चाहिए। सूर्य का प्रकाश, शुद्ध वायु तथा पीने के पानी का प्रबन्धन पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। पशु आवास हमेशा नहर, नदी, तालाब, या गड्ढों के आस-पास नहीं बनाना चाहिए।

2. छोटे पशुओं के लिए आवास :-

हमारे आदिवासी परिवेश में पशु घर अपने घरों से सटा या फिर खुले स्थान पर होता है। विभिन्न क्षेत्रों में पशु घर की विधियाँ जलवायु के अनुसार बदलती रहती है।

आदिवासी अंचल में छोटे पशुओं को उनकी संख्या के आधार पर आवास की व्यवस्था की जाती है, कम संख्या होने पर वे अपने पशुओं के अपने घरों में अपने साथ में ही या फिर बड़े पशुओं के साथ रखते है, परन्तु साथ में रखने में संक्रमण का खतरा बना रहता है। संक्रमण से बचाव हेतु हम कम लागत में एक अच्छा पशु घर बना सकते है।

2.1 बकरी घर



बकरी को गरीब की गाय के तुल्य माना गया है ग्रामीण अंचल में शायद ही कोई परिवार होगा जो बकरी नहीं पालता होगा। परन्तु उचित प्रबंधन के अभाव में बकरी पालन से अच्छा मुनाफा नहीं कमा पाते है, बकरी पालन में बकरी घर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बकरियों के लिए घर बनाने हेतु निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

- बकरी घर हवादार होना चाहिए ताकि शुद्ध एवं ताजी हवा मिले, प्रकाश का आवागमन और पानी की निकासी व्यवस्था एवं पर्याप्त स्थान होना चाहिये।
- बकरी घर की दीवार दो तरफ से मिट्टी तथा गोबर से लिपि हुई होनी चाहिये और बाकी दो तरफ से उपलब्धता के अनुसार बाँस, खजूर की टहनियों या लोहे की जाली का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि बकरी घर हवादार और जंगली जानवरों से सुरक्षित हो।
- बकरी घर कि जमीन या फर्श गोबर से लिपि होनी चाहिए।
- एक बकरी हेतु 4 X 3 फीट अर्थात 12 वर्ग फीट स्थान पर्याप्त होता है।
- बकरी घर की जमीन या फर्श की सतह आधार से थोड़ी ऊँची एवं ढालू होनी चाहिए।
- बकरी घर में मल-मूत्र की निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए ताकि किसी प्रकार का संक्रमण न फैले।
- बकरी घर में बकरियों के मल-मूत्र (गोबर) की निरंतर साफ-सफाई करनी चाहिए।

2.2 मुर्गी घर



आदिवासी अंचल में कई स्थानों पर मुर्गियों के आवास हेतु कोई विशेष घर नहीं बनाया जाता है, मुर्गियों की संख्या के आधार पर आवास या तो बड़े पशु घरों में या घर के खुले आँगन में विचरण करते है, जिसमे मुर्गियों को हिंसक जानवर (कुत्ते, बिल्ली, नेवला, बाज आदि) से जान का खतरा बना रहता है। मुर्गी पालन से कम से कम लागत में अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है, यदि हम मुर्गियों के घर पर ध्यान दे तो अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

तो आईये किसान भाइयों हम मुर्गी घर के बारे में जानते है, और एक अच्छे मुर्गी घर को बनाने हेतु किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये :-

- मुर्गियों की संख्या के आधार पर मुर्गी घर का आकर होना चाहिये।
- एक मुर्गी के लिए 1X1 फीट अर्थात 1 वर्ग फीट स्थान की आवश्यकता होती है।
- मुर्गी घर ऊँचे स्थान पर होना चाहिए, जहां की जमीन सुखी और समतल हो।
- मुर्गी घर की फर्श पर गेहूँ का भूसा या लकड़ी का बुरादा डालना चाहिये।
- मुर्गी घर में धूप आने की उचित व्यवस्था हो जैसे: बाँस या लोहे की जाली का उपयोग करना चाहिये।
- मुर्गी घर हमेशा साफ सुथरा, हवादार और अधिक से अधिक आरामदायक होना चाहिये।
- मुर्गी घर में पीने के पानी की उचित व्यवस्था होनी चाहिये।
- मुर्गी घर में हिंसक जीव जैसे कुत्ते, बिल्ली, साँप, चूहे आदि से बचाव होना चाहिए।

3. बड़े पशुओं (गाय, बैल, भैस) के लिए आवास

आधुनिकरण के इस दौर में आदिवासी क्षेत्रों में देखा गया है कि विगत वर्षों में बड़े पशुओं की संख्या में कमी आई है, पशु आवास को सामान्यतया दो वर्गों में बांटा जा सकता है :-

खुला पशु घर :- यह वह तरीका होता है जिसमे पशु को एक बाँस या लकड़ियों से घिरी हुई बागड़ अर्थात मिट्टी गोबर से लीपी दीवारों के अंदर खुला छोड़ दिया जाता है उसके खाने की व्यवस्था वही कर दी जाती है जिसे ग्रुप फीडिंग (सामूहिक आहार) कहते है। ऐसी व्यवस्था में समय-समय पर पशुओं को चारा नाद में दिया जाता है और पानी की व्यवस्था वही कर दी जाती है। जब मन में आता है तब खाता पिता है और टहलता रहता है। यह विधि बहुत ही उत्तम पाई गयी है।

बंद पशु घर :-

इस विधि से बनाये गए पशु घर चारों ओर से बंद होते है, पशुओं को बांध कर रखा जाता है और बड़े बाँस की टोपलियों में चारा दिया जाता है। पशु सभी मौसम में एक ही स्थान पर बंधा रहता है, उसे घुमने-फिरने की आजादी नहीं रहती है, इस प्रकार के पशु घर बनाने में कम स्थान की आवश्यकता होती



है और पशुओं की अलग-अलग खिलाई पिलाई की जा सकती है और पशु आपस में लड़ाई भी नहीं करते है। परन्तु इस प्रकार के पशु घर को बनाने में अधिक खर्च आता है।

4. उचित जल स्रोत

पशु घर में पशुओं को अच्छे आहार के साथ स्वच्छ पानी की भी आवश्यकता होती है, दूषित पानी पिलाने से कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती है। आदिवासी क्षेत्रों में अक्सर देखा गया है कि पशुओं को पानी पिलाने के लिए सामूहिक होद, नदी, नहर, या तालाब का उपयोग करते है परन्तु पशुओं को हमेशा साफ और स्वच्छ पानी ही पिलाना चाहिए।

पीने के पानी हेतु निम्नलिखित सावधानीयाँ रखनी चाहिए:-

- कई दिनों से रुका हुआ पानी या काई जमा पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- पानी के बर्तन या होद की समय- समय पर सफाई करनी चाहिए।
- गर्मियों के दिनों में पशुओं को चार से पांच बार पानी पिलाना चाहिए।
- बरसात में अधिकतर देखा गया है की जल स्रोतों जैसे नदी, नालों, तालाबों में पानी के साथ अवसाद (कीचड़) भी आ जाता है, पशुओं को गंदा मटमैला पानी नहीं पिलाना चाहिए।



प्यारे किसान, भाइयों-बहनों,

मेरे स्वराज साथियों, प्यारे बच्चों जय गुरु!

आपको सभी को वर्षा ऋतु की ढेरों शुभकामनाएं !!

आप सभी को वर्षा ऋतु में उगाई जाने वाली फसलों के लिए बहुत-बहुत सारी शुभकामनाएं। उम्मीद एवं आशा है कि इस ऋतु में खूब वर्षा हो, खूब पानी का संचय हो, धन-धान्य में वृद्धि हो,पोषण सुरक्षित रहें एवं हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित रहे तथा हम वर्षा जनित बीमारियों से बचे रहे।

सौभाग्य से हर माह आपसे संवाद करने का अवसर मिलता है। मैं आपसे किसी न किसी विषय पर पत्रिका के माध्यम से जुड़ पाता हूँ। हमारी कृषि,कृषि से जुड़े हुए विषय तंत्र, आजीविका, संस्कृति एवं परम्पराएँ इन सभी विषयों को लेकर नियमित रूप से चर्चा होती रही है, परंतु समय-समय पर ऐसा महसूस होता रहा है कि हम कहीं हमारी संस्कृति,जीवन शैली से भटक तो नहीं रहे है और यही हमारी पीढ़ि, खेती की सुरक्षा एवं चिंता का विषय भी है। हमारे लिए चिंता का विषय भी है। कुछ समय से पूर्व राष्ट्रीय - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः सुखी जीवन को लेकर चर्चा शुरू होने लगी है और कई अध्ययन कहते हैं कि आदिवासी अंचल खुशहाली लिए हुए हैं। आदिवासी जीवन शैली खुशहाली का एकमात्र आशा एवं स्तम्भ है, क्योंकि जीवन शैली में खुशियाँ किसी और पर निर्भर नहीं होती वह स्वयं के पास होती है। मानव स्वभाव है कि वह अपनी खुशियों के लिए विषय-वस्तु और परिस्थितियों पर निर्भर हो जाता है। हमारी जीवनशैली विषय-वस्तु तथा परिस्थितियों को अपने हिसाब से ढालती है और यही स्वराज की पहली नींव है।

हम अपने विषय जिसमें हमारी खेती, तौर-तरीके, आजीविका, हमारा सीखना, ज्ञान-अर्जन करना, वो किसी और पर निर्भर होने के साथ ही स्वयं के साथ भी होता है। चार दिन बाजार में सब्जी नहीं बिकेगी तो हमारे घर में सब्जी नहीं बनेगी, लेकिन खाने में ऐसा नहीं होता। हमारी परम्परा यह कहती थी कि हम मिश्रित खेती करते थे,अगर मौसम किसी एक फसल के लिए खराब है तो किसी एक के लिए अच्छा जरूर होगा, अगर सामान्य बारिश हो गई, बहुत बारिश हो गई तो हमारी साल पकेगी, उड़द गलेगा तो मक्का पकेगा, तुवर पकेगी, सब्जियां, भाजियां, वनस्पतियां होंगी और औषधियाँ उगेगी तो हमारी निर्भरता बाहरी चीजों पर नहीं होंगी। हमारी इन्हीं सब जीवनशैली की परंपराओं को ध्यान में रखकर अगर जी लेंगे तो शायद हम दुनिया के लिए खुशहाली का उदाहरण बन पाएंगे। हम नियमित तौर पर देख सकते हैं कुछ विषय जो कि सुबह उठने पर हमारे नीम कि डाली का मंजन जबकि बाजार आज भी ब्रश और पेस्ट पर निर्भर रहता है। हमारे घर में नीम की डाली होती है इसे काम में लेने के बाद फेंकते हैं तो वह भी प्रकृति को नुकसान नहीं पहुंचाती है। हमारी मिट्टी के अंदर गलकर मिट्टी के स्वास्थ्य में सहयोग करती है। हम बाजार पर निर्भर होते हैं ब्रश और पेस्ट के लिए, उसका पैसा भी बाजार में जाता है और उसके खत्म होने पर वह प्लास्टिक हमारे आस-पास ही पड़ा रहता है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है।

आज मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ। हर माह की चर्चा में यह उदाहरण नियमित आप तक पहुंचाता रहूँ। मुझे प्रसन्नता होगी कि हम स्वयं इन उदाहरणों को पहचाने, हमारे अपने पैसे व अपनी खुशियों को बाजार के हवाले नहीं करें। हमारी पीढ़ियों की खुशियों को दूसरों के भरोसे नहीं छोड़े, यही गांधी जी का सच्चा स्वराज है और यही दुनिया का उदाहरण है। आप सभी की समस्त प्रक्रियाओं से मैं सिखा हूँ, वाग्धारा सिखा है और दुनिया को बताता रहा है। अब समय आ गया है हम इन एक लाख परिवारों की बात, लाखों परिवार, हजारों गांव, विभिन्न क्षेत्रों और दुनिया तक पहुंचाएँ। साथियों आपका नियमित जुड़ाव ही इस बात को सशक्त करेगा।

मैं आग्रह करता हूँ की हर स्वराजकर्ता, सहजकर्ता, वाग्धारा साथियों, संगठन साथियों से इसे मजबूत बनाने में सहयोग करें पुनः पुनः आगामी फसल के लिए शुभकामनाएं !

धन्यवाद

जय- हिंद, जय- स्वराज !!!

आपका अपना

जयेश जोशी



शिक्षा एवं विकास स्वराज : आदिवासी समुदाय में शिक्षा के मायने और शिक्षा से जुड़ने के माध्यम

पृष्ठभूमि- भारतीय बाल आबादी का एक बड़ा हिस्सा वर्तमान में औपचारिक शिक्षा में शामिल होने वाली पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों का है। देश के तीन आदिवासी राज्यों राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश के आदिवासी जिलों में भी बड़ी संख्या में इस बाल आबादी को



देखा जा सकता है। औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता से परे आदिवासी समुदाय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रणेता, समरसता की भावना से, प्रकृति का आनंद लेते हुए अपना जीवन व्यतीत किया करते थे। वर्तमान में प्राकृतिक संसाधनों के खजाने से वंचित होते जा रहे, बाहरी निर्भरता की ओर बढ़ रहे, भोजन, पोषण और अन्य जरूरतों के लिए स्थानीय फसलों को उगाने के बजाय आदिवासी



समुदाय की आजीविका प्रणाली बदल गई। आदिवासी क्षेत्रों में खाद्य असुरक्षा और विशेषकर बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की स्थिति समय के साथ बदलती ही जा रही है। बड़ी संख्या में समुदाय के लोग आजीविका की तलाश में अपने स्थानों से पलायन करते हैं, जो बच्चों के जीवन में अस्थिरता बनाता है। वे शिक्षा से वंचित

होकर बाल मजदूर बन जाते हैं या बाल विवाह के शिकार होकर कम उम्र में जिम्मेदारियों के बोझ तले दबकर रह जाते हैं। इस समुदाय के बच्चे अपनी परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और प्राकृतिक खजाने के रूप में प्राप्त विरासत को खो रहे हैं।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में भाषा के मायने- कल्पना कीजिये एक हिन्दी भाषी इंसान जब मलयालयी, तमिल या

कन्नड़ भाषी इंसान के साथ पहली बार मिल रहा होता है और दोनों ही एक दूसरे की भाषा से अन्जान होते हैं, परिणामस्वरूप दोनों ही लोग एक दूसरे तक अपनी बात को पहुँचाने में असमर्थ पाए जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है दोस्तों क्योंकि अपनी बात या विचार को किसी दूसरे तक पहुँचाने या समझाने के लिए भाषा पहला माध्यम होता है। अगर दो लोगों के बीच भाषागत समानता नहीं है तो अपने विचारों का आदान-प्रदान करना आसान नहीं है।

इसी बात को आदिवासी बच्चों के सन्दर्भ में सोचकर देखिये। आदिवासी समुदाय जिसने स्थानीय भाषा अपनी विरासत में प्राप्त की है। दूर-दराज में बैठा आदिवासी बच्चा जिसने अपनी स्थानीय बोली के अतिरिक्त कभी कुछ सुना, देखा, समझा या जाना नहीं है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था के उन विद्यालयों से जुड़ता है जहाँ पर काम में ली जाने वाली पाठ्य सामग्री का बच्चों की क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा से कोई जुड़ाव नहीं होता है, ना ही कक्षा-कक्ष में सीखने-सिखाने के तरीके ऐसे होते हैं जहाँ बच्चों की अपनी भाषा की पहचान उन्हें विद्यालयों में रोके रख सके। विद्यालय स्तर पर

बिल्कुल वही स्थिति बनती है जैसे कि हिन्दी भाषी और मलयाली, तमिल या कन्नड़ भाषी इंसान के पहली बार मिलने पर होती है। अगली स्थिति को बच्चों की पाठ्य सामग्री के रूप में समझते हैं चूँकि बच्चों के लिए तैयार पाठ्य सामग्री भी उसी भाषा में होती है जिस भाषा पर शिक्षक का अधिकार होता है या उसने अपने परिवेश में बचपन से जानी सीखी और समझी होती है।

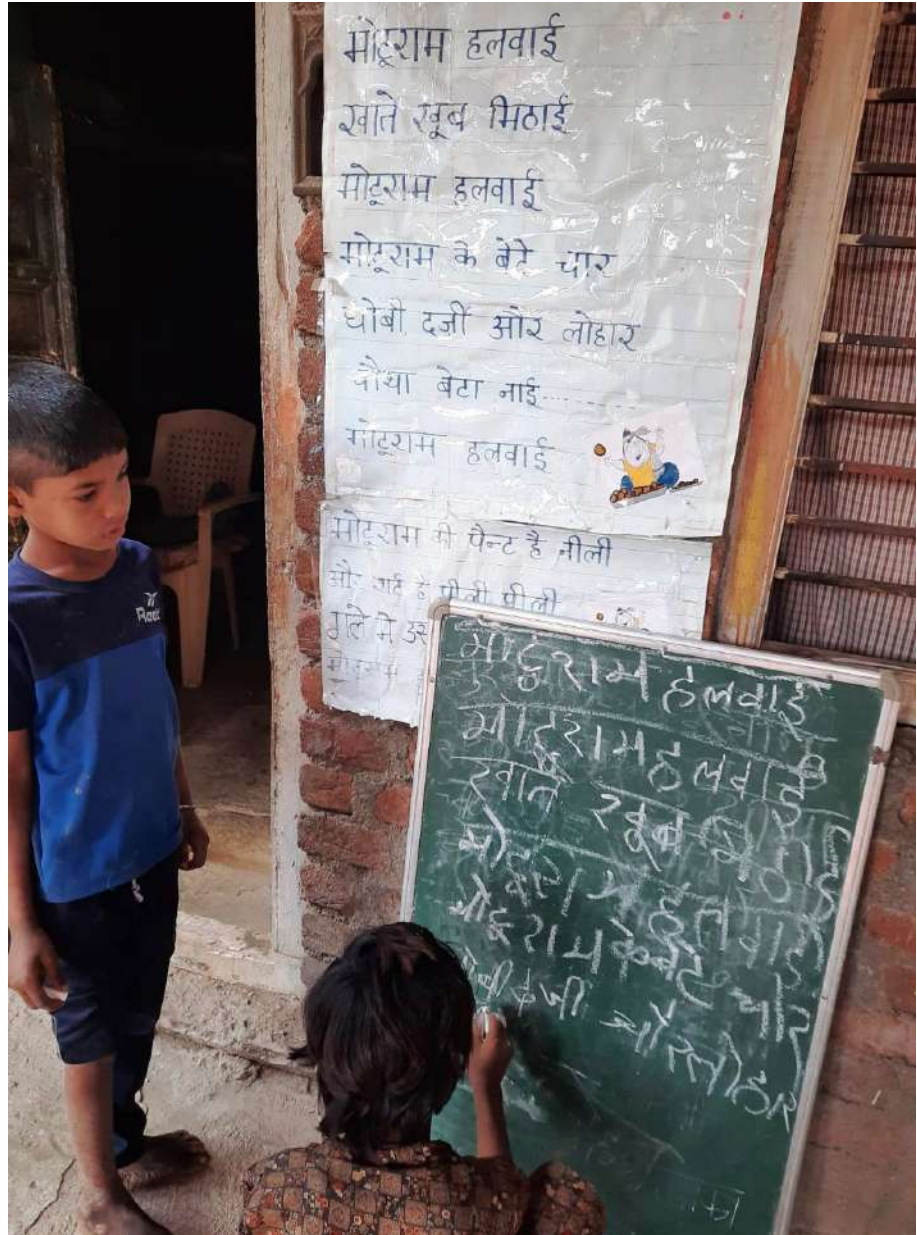
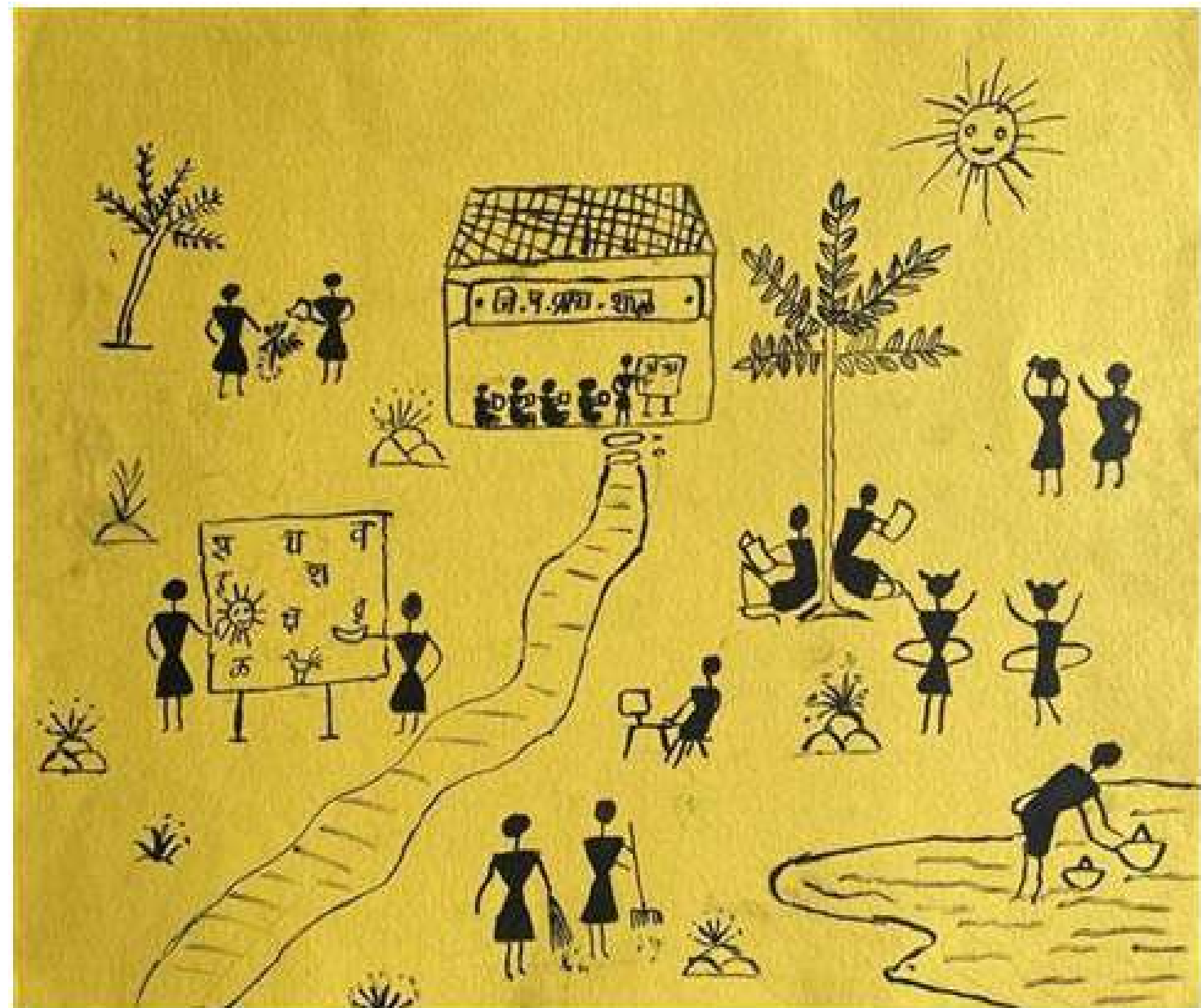
आदिवासी बच्चा एक गहरी खाई के बीच में फँसकर रह जाता है। क्योंकि विद्यालयों में उन बच्चों की भाषा को समझने वाला कोई नहीं होता है जो कि घर से निकलकर पहली बार विद्यालय गए बच्चे की पहली जरूरत होती है और बच्चे को भावनात्मक रूप से संबल देते हुए सुरक्षा का भी अहसास देती है। यही वह समय होता है जब बच्चे में बाहरी दुनिया पर भरोसा और विश्वास पनप रहा होता है। और यही वे स्थितियाँ होती हैं जो आदिवासी बच्चों को शिक्षा से विलाग कर देती हैं संवेदनशीलता के साथ वयस्कों के लिए यह सोचना अति आवश्यक है कि बच्चों के लिए ऐसी स्थिति को झेल पाना कितना पीड़ादाई होता होगा।



काम में ली जाने वाली परम्परागत तरीके की शैक्षणिक व्यवस्थाएं जिनमें बच्चों के सीखने के मापदंड के रूप में पुस्तक के अध्याय को एक पढ़े, सब सुने, को घसीटती शिक्षा व्यवस्था यह मान लेती है कि ऐसा करके बच्चे सब सीख जाते हैं। जबकि इस सोच के परे भाषा को समझने की जटिलता यह बच्चे के लिए विषयों की अवधारणात्मक समझ तो बहुत दूर की बात है, शिक्षक पढ़कर जो सुना रहा होता है उसे समझना भी बहुत बड़ा बोझ बन जाता है। चिन्तन का विषय है कि जो भाषा बच्चे ने कभी सुनी नहीं उसको बच्चा अचानक विद्यालयों में आकर कैसे समझने लगेगा ? एक और स्थिति को समझते हैं इन आदिवासी इलाकों के विद्यालयों में बच्चों के साथ शैक्षणिक कार्य करने वाले शिक्षक जो इनके परिवेश से नहीं, बल्कि बाहरी दुनिया में पल-बढ़, और सीख समझकर तैयार हुए होते हैं और जिनका अपना एक अलग परिवेश होता है, जो स्वयं की भाषा के साथ होते हैं। ऐसे में तैयार शिक्षक आदिवासी क्षेत्र में बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त हो जाने से स्थिति यह बनती है कि शिक्षकों को बच्चे की भाषा समझ में नहीं आ रही होती और शिक्षक की भाषा बच्चे नहीं समझ रहे होते।

अनुशंसा :

- सीखने-सिखाने के लिए बच्चों की स्थानीय भाषा को स्थान दिया जाना अति आवश्यक है।
- आदिवासी बच्चों के साथ स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति सुनिश्चित की जा सके, ताकि बच्चे जब खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करे तो उनको समझने वाला हो और विचारों को विकसित करने की प्रक्रिया में आनंद के साथ जुड़ सकें।
- पाठ्य पुस्तकों में स्थानीय भाषा को स्थान मिलने से बच्चे की विषयगत अवधारणा को बनाने में सरलता और रुचि का निर्माण हो सकेगा।
- विद्यालय स्तर पर स्थानीयता के साथ सीखने-सिखाने का वातावरण इन पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों का शिक्षा के साथ मजबूत रिश्ता सुनिश्चित करने में सहायक हो सकेगा।
- सीखने-सिखाने की रुचिकर और आसान प्रक्रियाएं बच्चों को सुरक्षित और भावनात्मक संबल का अहसास देगी।



..... आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को भाषा सीखने के माहौल की आवश्यकता



कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई- माही

राम राम – जय गुरु

साथियों जून माह में अत्यधिक गर्मी के कारण स्वास्थ्य और सुरक्षा पर उचित ध्यान देना जरूरी है। अपने परिवार के लोगों की जरूरतों को ध्यान रखते हुयें उन्हें वातावरण के अनुकूल रहने के लिए बराबर मात्रा में पानी, भोजन , ठंडे वस्त्र और अन्य आवश्यक सामग्री जो उपलब्ध हो, उचित परामर्शदाता से बात कर काम में लेवें । साथियों बदलते वातावरण के कारण कभी- कभी गर्मी के मौसम में बारिश और उच्च तापमान से कुछ मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। बारिश के दौरान नियमित रूप से आवासीय क्षेत्रों को साफ और सुरक्षित रखें ताकि किसी भी मौसमी आपदा से बचा जा सके। इसी क्रम में कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन अपने प्रयासों से अलग –अलग सरकारी कार्यालयों के साथ समन्वय स्थापित कर सामुदायिक विकास में निरंतर प्रयासरत है :-

वन विभाग के साथ समन्वय :- वन महोत्सव भारत में हर साल 1 जुलाई से 7 जुलाई तक मनाया जाता है। इस दौरान पेड़-पौधों के संरक्षण और वृक्षारोपण को महत्व दिया जाता है। हम हमारे समुदाय के साथ मिलकर वृक्षारोपण कार्यक्रमों में भाग ले और पेड़ों की देखभाल करने के लिए स्वराज संगठन आगे आकर स्वयं जिम्मेदारी लेते हुए समुदाय को जागरूक करे । इससे समुदाय में पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता के साथ ही हरियाली को बढ़ावा मिलेगा। वन महोत्सव से भूमि संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, और सामाजिक जागरूकता के लिए महत्वपूर्ण पहल है। यह लोगों को पेड़ लगाने और पेड़ों की सुरक्षा में उनकी भूमिका को समझाने का एक अवसर प्रदान करता है, जिससे हम स्वच्छ और हरित भूमि की ओर प्रगति कर सकते हैं।

ग्राम पंचायत के साथ समन्वय :- कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन, ग्राम स्वराज समूह, गाँव के सरपंच / सचिव से समन्वय स्थापित कर जाँब कार्ड थारक परिवारों के साथ जुलाई माह में अधिक से अधिक वृक्षा रोपण के साथ ही जल संरक्षण संबंधी कार्य मनरेगा में करवाकर सम्पूर्ण गाँव / पंचायत को हरा – भरा बनाने में मदद कर सकते है ।

पशुपालन विभाग के साथ :- स्वराज संगठन पशुपालन विभाग



के विशेषज्ञों से मिलकर पशुपालन व्यवसाय के बारे में सलाह ले । पशुओं की देखभाल, चारा प्रबंधन, निःशुल्क पशु बीमा योजनाओं कि प्रक्रिया, पशु नस्ल सुधार और विभिन्न मौसमी बीमारियों से छोटे- बड़े पालतू पशुओं को बचाने के लिए पूर्व में समय- समय पर वैक्सीनेशन, टीकाकरण अभियानों का आयोजन विभाग द्वारा किया जाता है । इसकी सम्पूर्ण जानकारी लेते हुए पशुओं को वैक्सीनेट करवाने में समुदाय कि सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार सहयोग करके उन्नत पशुपालन कर सकते हैं।

कृषि विभाग के साथ :- साथियों विगत वर्षों में खरीफ फसल उत्पादन को लेकर अनुभव कुछ ज्यादा अच्छा नहीं रहा है इसलिए इस बार हम कृषि विभाग से जून माह में पंचायत स्तर पर गिरदावर एवं कृषि अधिकारी से फसलों में लगने वाले कीट, प्राकृतिक आपदा और अन्य नुकसान के मामलों में वित्तीय सुरक्षा के साथ ही समुदाय को विभिन्न कृषि योजनाओं के बारे में जैसे :- सस्सिडी, ऋण, कृषि उपकरणों के लिए छूट, प्रशिक्षण के लिए अनुदान आदि सुविधाओं के बारे में सम्पूर्ण जानकारी को लेकर आपसी सवाद समुदाय के साथ करना होगा ।



शिक्षा विभाग के साथ :- साथियो हमारे गाँवों से ड्रॉपआउट(स्कूल नहीं जाने वाले) बच्चो की सूचि तैयार करे एवं विद्यालय की शाला प्रबंधन समिति के सहयोग से घर- घर जाकर शिक्षा की अलख जगाते हुए बच्चो को नियमित रूप से विधालय में भेजे ताकि हमारे बच्चो का भविष्य सुनहरे रूप में देख पाए । साथियों एक विषय पर मुझे और बात करनी है जो कि विद्यालयों में बालक / बालिकाओं के लिए अलग –अलग शौचालय, शुद्ध पेयजल,स्कुल चार दिवारी, जर्जर भवन और शिक्षको की कमी है तो हमे इन सब मुद्दों के साथ हमारे ग्राम स्वराज समूह में चर्चा करनी होंगी । स्वराज संगठन कि मासिक बैठक से जुड़े सदस्य यह मुद्दा रखते हुए संगठन सभी मुद्दो को ध्यान में रखते हुए उच्च स्तर पर आग्रह कर समाधान कि ओर कदम बढ़ाते हुए समुदाय में निरंतर प्रयासरत रहे ।

“चलो हाथ मिलाएं आगे आएँ हर घर में शिक्षा की अलख जगाएँ”

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – मानगढ़

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों में महिलाओं कि भूमिका

साथियों हम बात कर रहे है कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों में महिलाओं की भूमिका पर जो काफी महत्वपूर्ण रही है । संगठन लम्बे समय से समुदाय में सच्ची खेती, सच्चा बचपन, सच्चा स्वराज के लिए काफी गतिशील है । मानगढ़ इकाई में 8 कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों में कुल 160 सदस्यों में से 80 महिला सदस्य है जिन्होंने समय के साथ स्वयं कि भूमिका में कई बड़े बदलावों का

अब हर काम को चुनौती से भी आगे अवसर के रूप में स्वीकार करने लगी हैं। ग्राम विकास में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। महिलाओं में इतना आत्मविश्वास बना है कि वे अब विभिन्न मुद्दो पर पुरुषों के साथ मिलकर बेझिझक बात रखते हुए निर्णय लेने में भागीदारी निभाने लगी है। जिससे समुदाय में अपनी पहचान बनाने के साथ ही सामाजिक सशक्तीकरण से संबंधित परिवर्तन देखे जाने



सामना किया है। एक समय था जब महिलाओं की भूमिका सिर्फ घर की चार दीवारी तक सीमित थी वहीं आज उनकी भूमिका ने घर की चार दीवारी को तोड़ते हुए उन्हें स्वराज संगठनों कि मासिक बैठको के दौरान पिछले कुछ सालों से अलग –अलग क्षेत्रों में महिलाएँ अपने गाँव कि समस्याओं को लेकर पंचायत,ब्लॉक,जिला स्तर पर आगे आई हैं जिससे उनमें नया आत्मविश्वास पैदा हुआ है और वे

लगे है जैसे कि :

- स्वयं कि निर्णय लेने कि क्षमता ।
- समय समय पर पंचायत, ब्लॉक में सूचनाओं और संसाधनों तक पहुँच बनाई ताकि स्वराज संगठनों के साथ मिलकर उचित निर्णय लिये जा सकें।
- सामूहिक निर्णय प्रक्रिया में अपनी बात रख पाने की क्षमता।



वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे साथ ही गाड़ी कि स्पीड कम रखे... क्योंकि परिवार आपकी प्रतिक्षा कर रहा है ।



कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरन

॥ वाते पत्रिका के सभी पाठकों एवं श्रोतागण को जय गुरु ॥

नमस्कार पाठकों वर्षा ऋतु का आगमन हो चुका है और अब भीषण लूँ से पशुओं , पेड़ – पौधों एवं आम जन को राहत मिलेगी । तेज आंधी से फलदार पौधों विशेष रूप से हमारे वागड़ में आम के पेड़ो से आम झड़ जाने से किसानों को काफी नुकसान का सामना करना पड़ा है । वर्षा ऋतु के आगमन के साथ भीषण तूफान आने की पूरी सम्भावना है बिफर जाँय तो गुजर चुका परन्तु , बिना पूर्व सूचना के तेज हवा के साथ - साथ तूफान आ सकते है साथ ही शायद इसकी पूर्व सूचना भी ना हो जलवायु परिवर्तन से ऐसा संभव हो सकता है , जिससे सामान्य जन को आर्थिक एवं जनहानि होने की प्रबल संभावना है आप सभी सावधानी रखे एवं बचाव के तौर तरीके अपनावे ।

हम इस लेख के माध्यम से जाँनेगे हमारे कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों का सहयोग कर रही है। कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन सहयोग इकाई – हिरण का विस्तार बांसवाडा के सज्जनगढ़, कुशलगढ़ एवं मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के थान्दला एवं रतलाम जिले के बाजना तक है इकाई में कुल गाँवो की संख्या 416 है । हिरण इकाई में अभी तक 09 कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन है जिसमें सज्जनगढ़ पंचायत समिति में भीलकुआं, ताम्बेसरा, कसारवाडी एवं कुशलगढ़ पंचायत समिति में कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन टिम्डेमा बड़ा, पोटलिया, भगतपूरा, छोटी सरवा, एवं मध्य प्रदेश में कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन थान्दला , कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन बाजना

है। हर कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन में 35 से 45 के मध्य गाँव है लेकिन बाजना में 100 गाँव है अंत : दो नए कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन गठित करने की जरूरत महसूस हुई है जिसकी प्रक्रिया आगामी कुछ माह में पूर्ण कर ली जायेगी।

संगठनों ने मुख्य रूप से इस माह क्षेत्र में पेयजल की समस्या का निवारण किया, शादी एवं नोतरे के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट के कारण बड़े पलायन को रोकने हेतु ग्राम पंचायत एवं पंचायत समिति के अधिकारी – प्रतिनिधि से बात कर क्षेत्र में जल एवं मृदा संरक्षण हेतु नए कार्य स्वीकृत करवा चालू करवाए गए, साथ ही मनरेगा में कार्य की मांग को लेकर फार्म न. 06 को ग्राम स्वराज समूह के नेतृत्व में एक अभियान के रूप में भरवाया गया। सरकार द्वारा चलाया जा रहे महंगाई राहत शिविर में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी बढ़ाने हेतु पूर्व प्रचार -प्रसार तथा वंचित की सूची तैयार कर स्थानीय जन प्रतिनिधिमंडल को उपलब्ध करवाया गया । मंहगाई राहत शिविर में लगे कर्मचारियों को मिली अतिरिक्त जिम्मेदारी के कारण बहुत सारा जन कल्याण कार्य बाधित हो रहा था जिसे संगठन ने बातचीत कर सुनियोजित संचालन हेतु पैरवी की है । इससे नए जाँब कार्ड बनाना, एवं पशु टीकारण शुरू हुआ है । सरकारी अधिकारिओं के साथ बैठक कर वर्षा ऋतु के दौरान क्रियान्वित होने वाली सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर ज्यादा से ज्यादा सहयोग का आश्वासन दिया ।



करने के लिए निरंतर प्रयासरत है । इन प्रयासों में महिला नेतृत्व स्पष्ट रूप से समुदाय में झलकता है चाहे वह हलमा कर एक दुसरे कि मदद करना, संगठन कि मासिक बैठकों में रणनीति तय कर मनरेगा में रोजगार के लिए आवेदन करना , ग्राम स्वराज समूह में विभिन्न गतिविधियों जैसे- 1 मई को विश्व मजदूर दिवस मनाना, 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाना, 12 जून को विश्व बाल



- विकास तथा परिवर्तन की प्रक्रियाओं में सतत् भागीदारी।
- कमियों से पार पाना तथा स्वयं की छवि का सकारात्मक विकास हुआ है ।

श्रम निषेध दिवस का आयोजन कर जन-जागरुकता कार्यक्रमों में उत्सुकता के साथ भाग लेना आदि गतिविधियों में स्वयं कि उपस्थिति दर्ज करवा कर समय- समय पर अपनी आवाज बुलंद कर कुशल नेतृत्व के साथ –साथ सामाजिक सशक्तीकरण कि ओर प्रयत्नशील है ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन महिलाओं को सशक्त बनाकर समुदाय में अन्य महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में शामिल



हल्दी और मुर्गी पालन से भगवानदास के जीवन में आये खुशी के रंग

प्यारे किसान भाइयों हल्दी की खेती करने से बहुत ही कम लागत और कम खेती लायक जमीन में अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते है | हल्दी का उपयोग हजारों वर्षों से औषधि उपचार के लिए होता आ रहा है | इसमें कुरकमीन तत्व होता है | जिसके कारण हल्दी का पीला रंग होता है | इसका उपयोग अल्सर, पेट सम्बन्धी तकलीफे बिमारियों के उपचार हेतु किया जाता है | इसके अलावा हर घर में इसका उपयोग होता है | इसलिए हल्दी कि मांग वर्ष भर बनी रहती है | इसका उत्पादन करके किसान अपनी आजीविका में वृद्धि कर सकता है |

भगवानदास रौत बताते है कि ये पारम्परिक फसल के अलावा अपने खेत में प्रयोगात्मक खेती करने का इरादा मेरे जहन में बहुत दिनों से था | वाग्धारा संस्था से सच्ची खेती के बारे में जाना और सिखा उसमें मुझे जैविक खेती क्या है ? और कैसे फायदेमंद कैसे हो सकती है? आज के दौर में जैविक खेती कितनी महत्वपूर्ण और आवश्यक है इसके बारे में सिखकर मुझे सच्ची करने के लिए प्रेरित किया | हल्दी की अच्छी उपज के लिए वे अपने खेत में गोबर खाद का उपयोग करते हैं। दसप्रणी का उपयोग जरूरत के हिसाब से छिड़काव करते रहते हैं। मक्का और गेहूं की भी खेती करते हैं, जिससे उन्हें



हल्दी की खेती से अलग मुनाफा भी मिला है ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए उन्होंने अब हल्दी पाउडर के लिए छोटी हल्दी मशीन भी लगा ली है | वे हल्दी की पैकिंग कर बाज़ार में अच्छे दामो में बेचते है जिससे उन्हें प्रति किलो 400 रुपये मिलते हैं मैंने 10 किलो हल्दी 4000 रुपये तक बेचीं है। इसी के साथ मुर्गीपालन व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार युवाओं के साथ-साथ सिमांत भूमि एवं वाडी वाले किसानों के लिए उपयोगी हो सकता है। शुरुआत में सीमित संख्या में मुर्गियां रखने से एक साल में बड़ी संख्या में अंडो का उत्पादन किया जा रहा है।

इसके अलावा, यदि वर्ष में दो बार चूजों का उत्पादन किया जाता है और तीन से चार महीने तक उनकी देखभाल करने के बाद बाजार में बेचा जाता है। लाभ में वृद्धि की जा सकती है इसी कडी में आजीविका को बढ़ाया जा रहा है | इसका बेजोड़ उदाहरण डुंगरपुर जिले के साबला तहसील गाँव सागोट के आदिवासी सीमांत किसान भगवान दास रौत ने मुर्गी पालन का एक मॉडल विकसित किया हैं क्षेत्र के किसान भी ऐसे मॉडल देख सकते हैं।

55 वर्षीय भगवान दास रौत ने अपने खेत में एक मुर्गियों के लिए रूप से विचरण करने का



पैटर्न स्थापित किया है। उनके पास करीब तीन बीघा खेत है। उसकी देखभाल भगवान जी और उनकी पत्नी करती है | रौत अपने विगत दिनों के बारे में बताते हैं कोई काम न मिलने के कारण मैं गुजरात के गोधरा शहर में भवन निर्माण मजदूर के रूप में कार्य करने लगा पर उम्र बढ़ने और भारी काम होने से साल भर में वापस गाँव लौट आया और तीन मुर्गों के साथ कारोबार की शुरुआत की थी। परंतु कुछ लाभांश नहीं हो रहा था और पर्याप्त मात्रा में जानकारी ली नहीं थी, तब वाग्धारा के क्षेत्रीय सहजकर्ता नरेश बुनकर ने जुड़ने का अनुरोध किया |

वाग्धारा संस्था जो जनजातिय क्षेत्र के जलवायु परिवर्तन के कारण स्थायी टिकाऊ आजीविका एवं बच्चों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अधिकारों और भागीदारी को सुनिश्चित करती हैं | मैं 2019 में संस्था के साथ स्वराज मित्र के रूप में कार्य करने लगा और फिर मुझे संस्था द्वारा मेरी आजीविका बढ़ाने हेतु समय- समय पर प्रशिक्षण एवं तकनीकी जानकारी प्रदान कि 30 प्रतापधन मुर्गियाँ दि गयी एवं उन्नत खेती हेतु दशपर्णी दवाई, कंपोस्ट बेड और खेती के लिए औजार दिये | आज मेरे पास 120 मुर्गियाँ हो गई हैं | भगवान दास रौत कहते हैं खुले वातावरण में रखने से उनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहा और बेशक, मुर्गियाँ मृत्यु दर में कमी आई है। अपने घर के पास खेत में 30x 10 फीट साइज का मुर्गी घर बनाया गया है। मुर्गियों के लिए मुर्गी घर कि व्यवस्था की गई है। मुर्गी घर के चारों ओर 40 फीट जगह को 5 फीट ऊंची तार की जाली से घेरा गया है। बाड़ के अंदर कुछ पेड़ हैं, और घर के पीछे बड़े पेड़ों की छाया लगातार बनी हुई है। घर के अंदर अंडे सेने के लिए मुर्गियों को कतार में रखने की व्यवस्था की जाती है। इसके अलावा बोरियों में अंडे देने की भी व्यवस्था की गई है। उसके नीचे ऊंचे बैठने के



लिए चादर की छत और लकड़ी के खंभों की भी व्यवस्था की गई है।

खाद्य प्रबंधन
लंबे अनुभव के कारण भगवान दास जी अब मुर्गियों

के लिए आवश्यक दाने का अनुमान लगा चुके हैं। उनका कहना है कि वे बहुत नपे-तुले तरीके से दाना देते। प्रतिदिन लगभग 10 से 12 किलो स्टार्टर, तीन किलो आटा और बड़ी मात्रा में गेहूं,चावल व गर्मी और लू से बचाने के लिए प्याज के छोटे- छोटे टुकड़े करके खिलाते है और जब भी बाजार जाना होता है तब सब्जी विक्रेताओ से उसके अपशिष्ट के छिलके इत्यादी भी लाते है लहसुन का पानी पिलाते अनाज मुर्गी घर में रखा जाता है।

इसके अलावा बांध पर चौड़ी पत्ती वाली घास, मेथी घास का उपयोग किया जाता है। समय समय पर संस्था के आजिविका विपेशज्ञ के परामर्श अनुसार कैल्सियम की कमी कैसे पूरा किया जा सके उस हेतु मार्ग दर्शन मिलता रहा है | हर महीने 2 से 3

हजार खाने पर खर्च हो जाता है। और कुआं होने के कारण पानी की कोई कमी नहीं रहती |

बिक्री प्रबंधन और अर्थशास्त्र
रोजाना 30 से 40 अंडे मिलते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में इनकी काफी मांग है। बेशक हर दिन बिक्री होती है। दर 15 रुपये प्रति अंडा है। इसलिए प्रतिदिन कम से 600 से 700 रुपए की आमदनी हो जाती है। इसके अलावा सागोट गांव की आबादी तीन हजार है और इसके आस-पास चार गांव हैं। इसलिए ग्राहकों की कमी नहीं है। हर महीने 5 से 10 मुर्गियाँ बिकती हैं। होटल, ढाबे, पेशेवर के साथ-साथ ग्राहक भी मौके पर आकर खरीदारी करते हैं। यह 500रुपये से 600 रुपये प्रति किलो बिक रहा है। अंडे और मुर्गियों की कुल बिक्री से 10 हजार से 15 हजार रुपये प्रतिमाह आमदनी हो रही हैं | मुर्गी पालन किसानों को जलवायु परिवर्तन के कारण संकट में फंसे सीमांत आदिवासी किसानों के लिए अच्छी खासी आमदनी का पर्याय साधन उपलब्ध हैं |

वाग्धारा ने मेरी आजीविका ही नहीं अपितु मेरे परिवार के स्वास्थ्य हेतु भी पोषण वाटिका में मुझे सब्जी किट उपलब्ध करवाया उसमे भिण्डी,चावला,लौकी,तुर्ई,टमाटर, बेंगन,ग्वार फली, मैथी, पालक,मिर्ची आदि प्रकार की सब्जियों के उत्पादन करके भी मेरे परिवार का पोषण स्तर बढ़ाया | मुझे जैविक खेती के प्रति प्रेरित करके मेरी आजीविका बढ़ाने में मदद की इसके लिए मैं वाग्धारा संस्था का आभारी हूँ |



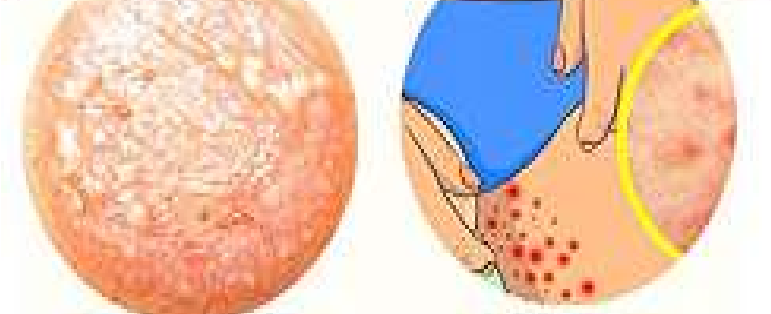
स्वास्थ्य एवं पोषण स्वराज : बच्चों का मौसमी संक्रमण से बचाव

हमारे देश में वर्षा ऋतु का प्रारंभ जून से ही दक्षिण भारत में हो जाता है, किन्तु जुलाई माह को वर्षा ऋतु का आरंभिक माह माना जाता है ,क्योंकि इस समय तक मानसूनी बादल देश के कोने- कोने तक पहुंच चुके होते हैं | इस मौसमी बदलाव के कारण प्राकृतिक वातावरण में भी बदलाव देखा जाता है | ये मौसमी बदलाव हमारे स्वास्थ्य व शारीरिक क्रिया-कलाप के तरीकों आदि पर भी

होने के कारण बच्चों को अधिकतर इस मौसम में त्वचा सम्बंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है, साथ ही हम अक्सर अपने बच्चो को बारिश के गंदे पानी में मस्ती के साथ नहाते, खेलने-कूदने देते है, जिसकी वजह से बच्चो को शरीर के विभिन्न अंगों में फंगल इन्फेक्शन (त्वचा संक्रमण) सम्बंधित कई समस्याएं हो सकती है जैसे कि - लाल चकते, दाद, खाज, खुजली,

बारिश में त्वचा संक्रमण से सम्बंधित होने वाली समस्या

- दाद,खाज-खुजली ।
- लाल चकते ।
- पैरों की उंगलियों में दरारे ।
- जांघ एवं बगल लगना ।
- त्वचा में जलन ।
- अन्य फंगल इन्फेक्शन ।



मौसमी संक्रमण से बचाव व सावधानियाँ

- शारीरिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें – बच्चो को बारिश के गंदे पानी में खेलने-कूदने व नहाने से रोके ।
- अगर बच्चे गंदे पानी के संपर्क में आये तो साबुन से स्नान कराये ताकि बैक्टीरियल इन्फेक्शन की संभावना न रहे ।
- घर में सफाई का ध्यान रखें, बच्चों का तौलिया अलग ही रखे । ऐसा करके आप इन्फेक्शन से बच सकते हैं ।
- गीले कपड़े ज्यादा देर तक न पहनाएं व कपड़ों को धूप में अच्छे से सुखाये ।
- हल्के सूती वस्त्र पहनाएं और ध्यान रहे की बच्चें अधिक देर के लिए भीगे न रहें ।
- आस-पास पानी का ठहराव न होने दें व कीटों को दूर रखने के लिए प्राकृतिक कीटनाशकों का छिड़काव या उपयोग करे। (जैसे कि - नीम की पतियों से धुआं)
- सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करना चाहिए ।

बच्चो को त्वचा सम्बंधित संक्रमण से बचाने के घरेलु उपाय

नीम के पत्ते का पानी

नीम में एंटी बैक्टीरियल और एंटी इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं | यह छोटे बच्चों की त्वचा को साफ करने के साथ-साथ उन्हें खाज, खुजली और जलन से भी बचा सकता है | नीम त्वचा से बैक्टीरिया और फंगल संक्रमण दूर करने और त्वचा को स्वस्थ बनाने में मददगार साबित हो सकता है | पानी को गरम कर उसमे हरे नीम के पत्ते डाल कर पानी को ठंडा होने दे उसके बाद उस पानी से बच्चो को स्नान कराये, ऐसा करने से त्व चा के लिए हानिकारक बैक्टीरिया और फंगल संक्रमण दूर करने में मददगार होता है |



नारियल के तेल का इस्तेमाल

नारियल तेल में विटामिन ई और सी पाए जाते हैं, जो एंटीफंगल हानिकारक बैक्टीरिया को दूर करने व त्वचा की समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है | इसलिए त्वचा से सम्बंधित संक्रमण वाले प्रभावित हिस्से में नारियल तेल लगाना फायदेमंद होगा, साथ ही यह हमें स्थानीय स्तर पर आसानी से मिल भी जाता है |



प्रभाव डालता है । बारिश का मौसम कई लोगों के लिए सुकून भरा हो सकता है, लेकिन छोटे बच्चों के लिए नहीं | यह मौसम अपने साथ बहुत सारी संक्रमण से सम्बंधित बीमारियाँ भी लेकर आता है, जिनसे बच्चो को बचाना बेहद जरूरी है । वातावरण में अत्यधिक नमी के कारण बैक्टीरिया और संक्रमण आसानी से पनपते हैं । बच्चों की त्वचा मुलायम

पैरों की उंगलियों में दरारें, जांघ एवं बगल में दाद, त्वचा में जलन और अन्य त्वचा सम्बंधित संक्रमण की दिक्कत हो सकती है । साथ ही बारिश का समय कीटों के प्रजनन की अवधि माना जाता है, इसलिए इस समय मक्खी, मच्छर, जहरीले कीटों की अधिकता रहती है, ऐसे में इनसे बच्चो का बचाव करना भी आवश्यक है ।

****साथ ही मौसमी संक्रमण के लक्षण दिखाई देने पर हम तुरंत डॉक्टर से परामर्श कर उचित इलाज कराएं और दी गयी जानकारी का पालन करे और डॉक्टर के बयाते अनुसार नियमित दवाइयाँ लेवे ।**



वागधारा, कुपड़ा



SCAN ME

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

वागड रेडियों 90.8 FM, मुकाम-पोस्ट कुपड़ा, वाग्धारा केम्पस, बाँसवाड़ा (राज.) 327001

फोन नम्बर है - 9460051234 ई-मेल आईडी -rad10@vaagdhara.org

यह “वातें वाग्धारा नी” केवल आंतरिक प्रसारण है ।

..... | संकलन एवं सहयोग : **जागृती भट्ट, बाबुलाल चौधरी** |

